रिकार्डः-तीर चला..... ॐ पिताश्री बॉम्बे प्रातः 10/1/62
देखो यह हैं ज्ञान के रत्न। एक2 रत्न लाखों, पद्मों रुपये का है। अब यह हैं ज्ञान के बाण। पहले ते पहला नम्बर कौन–सा बाण है जो मारने लिए बाबा सिखलाते हैं? शास्त्रों में तो हिंसा की बातें दिखलाई हैं कि मछली की आँख में बाण मारा आदि..... यहाँ हिंसा की तो कोई बात नहीं। यह तो आँखों से ज्ञान बाण मारना है। आँखों से फिटा हो जाते हैं ना। इसमें क्या करना है। बुद्धि रूपी आँख से उस बाप को देखना है। बाण मारना है। शिवबाबा में दृष्टि चली जावेगी तो उनसे सब वर्सा मिलेगा। बुद्धि का योग कोई मनुष्य या ब्रह्म तत्व से नहीं लगाना है। वो तो है रहने का स्थान। जहाँ ब्रह्माण्ड का मालिक रहता है। वो खुद कहते हैं बच्चे अब मेरे साथ बुद्धि का योग लगाओ। फिर मेरे पास जो कुछ है वो तुम खींच लेंगे, जैसे इनजैक्शन सारी दवाई खींच लेता है। तो शीशी एकदम खाली हो जाती है। बाबा भी कहते हैं मेरे पास जो कुछ है सब लेकर मुझे एकदम खाली कर दो। जैसे लौकिक बाप बच्चों को सबकुछ दे खुद खाली हो किनारे हो जाते हैं ना। अब बाबा भी बच्चों को सबकुछ दे देते हैं। बच्चों को दे खुद वानप्रस्थी हो जाते हैं। पहले तो बच्चे बनें, त्यागी बनें। कहा जाता है ना यह बहुत त्यागमूर्त है। यह कोई हद का त्याग नहीं, जैसे सन्यासी करते हैं। वो तो घरबार छोड़ जाते हैं फिर भी रहते तो इसी पतित दुनिया में हैं ना। हम तो देह सहित देह के सभी संबंधों सारी दुनिया से मोह निकालते हैं। वो तो एक घर के नर्क को छोड़ फिर भी बेहद के नर्क में तो रहते हैं ना। जंगल आदि भी नर्क में आ गया ना। सिर्फ घर का रिनाउन्स करते हैं उनको कोई त्यागी नहीं कहेंगे। समझते हैं स्त्री नागिन है, घर नर्क है; परन्तु स्वर्ग तो है ही नहीं। फिर कहाँ जावेंगे? सारी दुनिया ही नर्क है यह कोई नहीं जानते। उनसे पूछो इस दुनिया को नर्क कहेंगे। सतयुग को स्वर्ग कहेंगे ना; परन्तु मानेंगे मुर्दे कब नहीं। वो तो कह देंगे सतयुग कलियुग क्या यह सब कल्पना है। जगत बना ही नहीं है। घर को नर्क समझ छोड़ते हैं फिर जंगल नर्क में जाकर छोड़ते हैं। अब तुम बच्चे जानते हो कि यह दुनिया नर्क है। तुमको इसलिए सारी दुनिया से बुद्धियोग तोड़ना है; क्योंकि यह तो कब्रिस्तान बनना है। तुम्हारा त्याग कितना बड़ा है। कोई भी मोह नहीं। न घरबार से, न देह से, न इस दुनिया से। सूर्यवंशी चक्रवर्ती राजा बनना कोई मासी का घर थोड़े ही है। इसमें त्याग पूरा चाहिए। सबसे मोह नष्ट करना है। इसमें टाइम लगता है। जा जी तो पुरुषार्थ करते रहो। स्टडी करते रहो। घर में रहते त्याग वृत्ति चाहिए तन–मन सहित। बाबा वारी जाऊँ, कुर्बान जाऊँ। वो सन्यास तो बिल्कुल अलग है। इस पुरानी दुनिया से बुद्धियोग तोड़ना है। ..... में निकल नहीं सकते। ऐसे मत समझो घर नर्क को छोड़ जंगल स्वर्ग में जा बैठता है। नहीं, वो भी नर्क ही है। सारी दुनिया से बुद्धि का त्याग चाहिए। इसमें मेहनत है। ..... सन्यासी बड़े2 मंडलेश्वर आदि बन गए हैं; परन्तु उनको भी तुमको पूजना है। भक्तिमार्ग में उनको माला सिमरनी होती है। वास्तव में भक्तिमार्ग के यह कर्मकाँड आदि सन्यासियों को निषेध है। गृहस्थ धर्म प्रवृत्तिमार्ग वालों की रसम–रिवाज़ जो हैं माला फेरना, मंदिर में जाना, व्रत नियम रखना, यह सब सन्यासियों के लिए निषेध हैं। सन्यासियों की रसम–रिवाज़ बिल्कुल अलग। यह शिवबाबा बैठ समझाते हैं। हरेक धर्म की रसम–रिवाज़ अलग है। एक हो न सके। एक रसम होती है सिर्फ देवी–देवता धर्म की। फिर त्रेता में भी राम–सीता की रसमो–रिवाज ल॰ना॰ से अलग हो जाती। ..... हुई ना। रसमोरिवाज का बहुत

फर्क है। सन्यासियों का भी निवृत्तिमार्ग है। यह तो अब घुस गए हैं। पहाड़ आदि छोड़ फ्लैट्स में आ घुसे हैं। गीता सुनाना, व्रत आदि सिखलाना जैसे गृहस्थियों का धर्म हो गया है। तमोप्रधान बन पड़े हैं। हाँ, फिर भी पवित्र हैं और कोई गुरु तो मिलते नहीं तो इनको ही गुरु कर देते। सच्चा गुरु तो इस समय नर्क में किसी को मिल न सके। सत् तो है ही एक बाबा, जो सचखण्ड स्थापन करते हैं। बाबा कितना सच्चा है। कहा जाता है रिलीजन इज़ माइट। हम अपने देवी–देवता धर्म की अब स्थापना कर रहे हैं। वहाँ कितना हम अखण्ड, अटल, सुख–शान्तिमय राज्य करते हैं। तो बच्चे बाबा कहते हैं त्याग मूर्ति पूरी चाहिए। देह सहित सब संबंध त्याग। सन्यासी यह शिक्षा कब दे न सके। बाबा कहते सब देह के संबंध त्याग अपन को नंगा समझो। बाबा कहते मुझे याद करो। अब तुमको मेरे पास आना है। यह विनाश भी अवश्य होना है। नर्क से स्वर्ग, रात से दिन सिवाय विनाश के हो न सके। तो जिस दुनिया का विनाश होना है उनको बुद्धि से भूलना है। विनाश सा॰ भी बाबा ने करा दिया है। देखो मम्मा ने ..... नहीं किया तो पहले नम्बर में चली गई। पहले ल॰ पीछे ना॰। भविष्य में ऊँच पद, ऊँच नाम हो जाता। यहाँ नहीं। यहाँ तो बच्ची ठहरी ना। बाबा आकर माताओं को उठाते हैं। आजकल देखो मातायें कितने बड़े2 पद पर हैं। विजयलक्ष्मी कितना गरुड़ रहती है। जब बाबा माताओं को उठाने आते हैं तो सभी को माताओं पर तरस पड़ जाता है। तो अब हम हैं त्यागमूर्ति। ज्ञान मूर्ति। बाबा हमको ज्ञान–ज्ञानेश्वरी बनाते हैं। जगदम्बा त्याग और ज्ञान की मूर्ति है। तो ऐसी त्यागमूर्ति बनना है। वो त्याग करते हैं हद का। यह है बेहद का। यह नॉलेज सिवाय बाबा के दूसरा कोई दे न सके। इसमें कोई घरबार छोड़ना नहीं है। पहले तो भट्ठी बननी थी। नई नहीं तो गऊमाला कैसे बने। वो पार्ट पूरा हुआ। हिस्ट्री सुनाई कि कैसे ..... जाते थे। अभी भी भौंक तो इतनी करते हैं जो बात मत पूछो। भू भू तो सभी पर करते हैं। नेहरू को भी छोड़ते नहीं हैं। ताकत तो कोई में है नहीं। प्रजा राज्य है। करके 5/10 वर्ष का प्राइम मिनिस्टर आदि बनते हैं। राजायें तो सारी लाइफ तक रहते है और तुम तो जन्म व जन्म राजा बनते हो। तुमको भगवान बैठ यह राजयोग सिखलाते हैं और ज्ञान देते हैं। यह है गॉडली पाठशाला। तो जब .....मूर्ति बनो तब राज्यभाग्य मिलेगा। शिवबाबा को याद करना है। और ड्रामा को जानना है। 5000 वर्ष की बात है। महाभारी लड़ाई को 5000 वर्ष हुए। वो फिर गीता को द्वापर में ले गए हैं। अगर महाभारी लड़ाई के बाद सतयुग स्थापन हुआ तो फिर द्वापर में कैसे सतयुग होगा। इन गुरु–गोसाईं ने लाखों वर्ष सुना सबको विमुख कर दिया है। तो उनका भी त्याग करना है। उनके पिछाड़ी लटक नहीं मरना है। अगर तुम श्री कृष्ण की भक्ति करते आये हो। भारतवासी स्वर्ग को याद करते हैं तो फिर ऐसा बनना है। यह भी कोई नहीं जानते कि राधे–कृष्ण ही फिर ल॰ना॰ बने हैं। ल॰ना॰ को सतयुग में। कृ॰ को द्वापर में ले गये हैं। 16 कला श्री राम को 14 कला श्री कृष्ण को कह देते। उनकी भी आपस में बड़ी युद्ध चलती है। पुजारी लोग आपस में लड़ पड़ते हैं। ..... मथुरा आदि की ओर जाये खे.... देखो। बाबा अनुभवी है। तो कितना त्यागी बनना है। वास्तव में त्याग मुश्किल होता है। पति का स्त्री के लिए; क्योंकि स्त्रियों ने ..... नहीं है। पुरुष तो ढेर हैं अब स्त्रियों को बाबा त्याग सिखलाते हैं। दुनिया भी है सब फैशनेबल। अपन को वैकुण्ठ की परियाँ समझती हैं। तो बाबा ऐसे फैशन से त्याग वृत्ति बनाते हैं और फिर फर्स्ट क्लास दुनिया में ले चलते हैं। उनका नाम ही है हेविनली गॉड फादर। हेविन में अथाह सुख है। फिर से सतयुग की स्थापना होती है। सतयुग में सूर्यवंशी राज्य था। फिर श्री कृष्ण का जो

..... बच्चे हुए वो राज्य करते थे। 1250 वर्ष राज्य चला। वो फिर लाखों वर्ष कह देते कि .... भगवान बिगर यह सब .....बातें कोई समझा न सके। तो बाप कहते हैं पूरा त्यागी, नष्टोमोहा बनो अर्थात अशरीरी भव। मेरे को ही याद करो। यह ही बाण है। कहते हैं ना नज़र न लग जाये। बाबा कहते हैं माया की नज़र लग गई तो खलास। इसलिए बुद्धियोग एक शिवबाबा से लगाओ। भक्तिमार्ग में सब आशिक हैं एक माशूक के। और .... कहते हैं ..... बड़े रूप है। सब माशूक हैं अर्थात अपने ही आशिक हो गये। फिर आशिकपना क्यों करते? भगवान को भी गंगा स्नान करना पड़े क्या? यह सब हैं माया का . .....। माया ने झूठा बना दिया है। त्यागवृत्ति पर जनक का मिसाल इनको भी कहा रख दो। जरूरत समय मंगा लेंगे। यहाँ कोई करोड़ तो इकट्ठे नहीं करने हैं। गाँधी को मदद करने वाले अब सुख भोग रहे हैं; परन्तु है तो सब नर्कवासी ना। उनमें कोई पवित्र ....आत्मा भी है। श्री कृष्ण को भी महान आत्मा, पवित्र आत्मा कहा जाता है। आत्मा और शरीर दोनों पवित्र थे। यहाँ तो प्रकृति पवित्र है नहीं। तो अब श्री कृष्ण पुरी में अगर जाना है तो त्याग मूर्ति बनो। श्रीमत पर चलो। मोह एक में रखना है। नहीं तो श्री कृष्ण की राजधानी में जा न सकेंगे। वहाँ है एक धर्म, एक मत। फिर तो अनेक धर्म होने से एक मत खत्म हो जाती है। फिर अनेक धर्म, अनेक शास्त्र हो जाते। यह चक्र हूबहू रिपीट होगा। सूर्यवंशी कोई दूसरा नया राज्य नहीं होगा। यही होंगे। मनुष्य भी यही होंगे। कोई लम्बे–चौड़े मनुष्य भी नहीं होते। यह लोग कितने बड़े2 चित्र बनाते हैं। अब हनुमान की कितनी पूजा होती है। लाखों खर्च करते हैं। बाबा ने समझाया है हम ही सब बन्दर थे। अब बाबा मंदिर पवित्र बना रहे हैं। हम रावण माया पर विजय पाते हैं। कल्प पहले जो बने हैं वो अपना सा॰ कराते रहेंगे। अपनी जाँच करनी चाहिए हम कहाँ तक निर्मोही, त्याग वृत्ति बने हैं। एक मम्मा बाबा। इनके हम सब बच्चे हैं। स्त्री–पुरुष दोनों ब्र.कु.कुमारी कहलाते हैं। फिर अगर कुदृष्टि रखी तो क्रिमिनल ऐसॉल्ट कहा जावेगा। यह बाबा अभी अपने बच्चों लिए एलान निकाला है कि एक बाप के बच्चे आपस में भाई–बहन ठहरे। फिर अगर क्रिमिनल एसॉल्ट किया तो रोगी बन पड़ेंगे, बहुत कड़ी सज़ा खावेंगे। कोई तो वायदा भी करते हैं बाबा हम युगल पवित्र रह दिखावेंगे। गंधर्व विवाह सिर्फ यहाँ ही होता है। कोई बच्ची को छुड़ाने लिए हिम्मत दिलाते हैं बाबा कहेंगे अच्छा करके दिखाओ। यह सतोप्रधान सन्यास। उनका है रजो, तमोप्रधान सन्यास। माया भी कम नहीं है। इसमें पूरी त्यागवृत्ति चाहिए। यहाँ–वहाँ लटकने वाले पद न पा सकेंगे। वो झूँझार बुद्धि कहे जायेंगे। यहाँ तो विशाल बुद्धि चाहिए। बाबा ने एक नया पर्चा छोटा–सा ..... है जिसमें एक तरफ भी कृष्ण का चित्र दूसरी तरफ मैटर है तो प्लास्टिक की थैली में डाल बांटा जाता है। यह ज्ञान का बाण है यह और साथ में 4 पेज वाला। अरे, यह पद्मों की मिल्कियत है। रेलवे में बुक स्टाल वालों को समझा कर वहाँ रखाओ। कोई को तीर लग जाये तो काम करने वालों को बहुत दलाली मिल जावेगी। यह गुप्त आशीर्वाद मिलती है। ऐसे2 कार्य करना चाहिए। गीता पाठशालाओं में जाकर बाँटना चाहिए। हमारे पास गीतापाठी सन्यासी आदि बहुत आये हैं। कहते आपकी बात तो बिल्कुल सत्य है पतित–पावन एक **P.** है; परन्तु अगर मैं जाकर बताऊँ शिव भगवानुवाच तो सब कहेंगे तुमको किसने सिखाया? हमारी दुकान ही खलास हो जावे फिर तो हम भूख मरेंगे। हमने कहा–अच्छा, हम खिलावेंगे तुम सिर्फ यह प्रचार करो। बहुत घुटका खाते हैं। इतनी राजाई कैसे छोड़ें। ऐसे अगर जल्दी निकले तो बी.के. का ..... इसने में पढ़ जावे। ऐसा होना ही नहीं है। आहिस्ता2 पत्ते निकलते रहेंगे। तुम यह ..... गीता पाठशाला से समझाओ।

हमने आपके लिए ईश्वरीय खजाना लाया है। आप अच्छी रीति इस पर अध्ययन करना। ..... जानने से स्वर्ग का मालिक बन जावेंगे। यह बहुत ..... चीज़ है। कुछ भी न समझो तो आ... पूछना। नम्रता से बात करना पड़े। चार पेज वाला और यह पर्चा दोनों साथ में हो और दोनों ही अलग2 प्लास्टिक .... कवर में हो। कहते हैं ना शै न खटे शै का बेढ़न खटे। जहाँ गीता का पाठ हो वहाँ तुम माताओं को ज़रूर देना चाहिए और शिव के भक्त हो और धर्म वाले इतना अटेन्शन नहीं देंगे। मेहनत करनी है। मेहनत बिगर यहाँ बैठे कोई काम नहीं चलेगा। जो भी आये उनको समझाओ कि यह नर्क है। सभी नर्कवासी हैं। नर्कवासी किसी को स्वर्गवासी बना न सके। तो अब तुम बच्चियाँ यह धंधा करने लग जाओ। तुम सिर्फ सर्विस करो तो हम लाखों छपा देंगे। सर्विस का सबूत मिलना चाहिए। ऐसे नहीं सुनकर फिर सो जाना है। ॐ

पिताश्री की लिखित :– ॐ

" विनाशकाले विपरीत बुद्धि "

वर्तमान कलियुगी नर्कवासी श्री श्री 108 जगतगुरु कहलाने वाले महात्माओं, साधुओं, शास्त्रवादी विद्वानों, पापात्माओं की विनाश काले विपरीत बुद्धि –

नजूमियों की भविष्यवाणी है कि 5000 वर्ष पहले भी 8 ग्रह आकर इकट्ठे हुए थे और महाभारी महाभारत लड़ाई लगी थी। वो तो अच्छा ही हुआ था जो महाभारत लड़ाई द्वारा कलियुगी आसुरी दुनिया विनाश हुई थी और सतयुगी दैवी दुनिया और रामराज्य की स्थापना हुई थी। अब याद करो कि उस समय श्रीमद् भगवदगीता का ऐपिसोड चला था अथवा रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ भी रचा हुआ था। जिस रुद्र ज्ञान यज्ञ से महाभारी विनाश ज्वाला प्रज्वलित हुई थी। उस समय यादव कुल था। कौरव कुल था और पांडव कुल भी था। शिवशक्ति सेना भी थी। जिनके सिर पर ज्ञानामृत का कलश रखा गया था। आसुरी सम्प्रदाय को दैवी सम्प्रदाय बनाने तथा कलियुगी नर्कवासी भारत को सतयुगी स्वर्गवासी बनाने।

अब ज़रा बुद्धि से काम लो कि यह वो ही गीता वाला समय तो पुनरावृत नहीं हो रहा है। अगर वो ही आठ ग्रह आकर इकट्ठे हुए हैं तो यह लड़ाई भी वो ही महाभारत लड़ाई माननी चाहिए। जिससे स्वर्ग की स्थापना हुई थी। फिर इसमें डरने वा घबराने की क्या बात है। यह महाभारत लड़ाई ही स्वर्ग के द्वार खोल रही है। तो फिर इन शान्ति यज्ञ आदि रचने का क्या फायदा। यज्ञ रचने वालों का तो **Waste of Time, Waste of Money, Waste of Energy** ही कहेंगे। अब आपको शुभ सन्देश दे रहे हैं कि अब वो ही गीता के भगवान द्वारा रुद्रगीता ज्ञान यज्ञ रचा हुआ है। वो ही शक्ति सेना गुप्त वेष में इस भारत को नर्क से स्वर्ग वा कंगाल से सिरताज बनाने का कार्य कर रहे हैं। इसलिए आप आकर इस अन्तिम जन्म में अपना सतयुगी तथा स्वर्ग के रचयिता बाप से सुख का वर्सा पाने का पुरुषार्थ करो। अब नहीं तो कभी नहीं। ॐ

डायरैक्शन

बापदादा बोले ऐसी2 लिखित अखबार में डलवाते रहो।

डायरैक्शन

श्री कृष्ण के नए चित्र बम्बई में छपे हैं। यह चित्र कानपुर और अम्बाला भेज दिए गए हैं। यू॰पी॰ के सभी सेन्टर्स कानपुर से मंगा लेवें। और ...हारनपुर सहित पंजाब के सभी सेन्टर्स (अमृतसर बराला जलन्धर .....) अम्बाला से मंगवा लेवें। ..... जलन्धर वाले अमृतसर से लेवें। ऐसा जगदीश भाई ने देहली से लिखते हैं।